IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

इंटरनेट हास्य-व्यंग्य साहित्य का उद्भव और विकास : हिन्दी साहित्य की नई लोक संस्कृति का अध्ययन

आलोक भारद्वाज

असिस्टेंट प्रोफेसर

राजकीय महाविद्यालय, समथर, झांसी

सारांश: इक्कीसवीं सदी में इंटरनेट और सोशल मीडिया के तीव्र विस्तार ने साहित्य के सृजन, प्रकाशन, प्रसार और पाठकीयता की पारंपरिक संरचना को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। हिन्दी साहित्य में यह परिवर्तन विशेष रूप से हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में दिखाई देता है। फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सऐप, यूट्यूब, ब्लॉग तथा अन्य डिजिटल मंचों ने हास्य-व्यंग्य को अत्यंत तीव्र, संक्षिप्त, दृश्यात्मक और सहभागी रूप प्रदान किया। चुटकुले, व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ, पैरोडी, कार्टून, मीम, वायरल वीडियो, व्यंग्य-चित्र तथा राजनीतिक हास्य इंटरनेट की लोकप्रिय अभिव्यक्तियों का हिस्सा बन गए। पारंपरिक हिन्दी व्यंग्य की एक दीर्घ परंपरा रही है। भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालमुकुंद गुप्त, प्रतापनारायण मिश्र आदि से होते हुए आधुनिक काल में हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल और अन्य रचनाकारों ने व्यंग्य को सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों की आलोचना का प्रभावी माध्यम बनाया। इंटरनेट ने इसी परंपरा को एक नए जन-संचार माध्यम से जोड़ा है। 2015 में Sangeet Kumar ने भारतीय वेब पर memes, viral videos और parody को सामाजिक-सांस्कृतिक आलोचना के उभरते हुए रूप के रूप में विश्लेषित किया था। उन्होंने विशेष रूप से भारतीय इंटरनेट संस्कृति में parody और satire को सामाजिक आलोचना के नए discourse के रूप में देखा।

2019–20 का कालखंड इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि इस समय भारत में मोबाइल इंटरनेट, सोशल मीडिया और user-generated content तेजी से बढ़ रहे थे। इंटरनेट हास्य-व्यंग्य ने साहित्य और लोक-संस्कृति के बीच एक नया संबंध निर्मित किया, जिसमें पाठक केवल पाठ ग्रहण नहीं करता बल्कि स्वयं सामग्री का निर्माता, परिवर्तक और प्रसारक भी बन जाता है।

प्रमुख शब्द: इंटरनेट साहित्य, हास्य-व्यंग्य, हिन्दी साहित्य, सोशल मीडिया, मीम, पैरोडी, डिजिटल संस्कृति, लोक संस्कृति, वायरल संस्कृति, युवा पाठक।

1. प्रस्तावना

हास्य और व्यंग्य मानव समाज की विसंगतियों को देखने की विशिष्ट दृष्टि प्रदान करते हैं। मनुष्य अपने आसपास की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों को केवल गंभीरता से ही नहीं देखता, बल्कि हँसी, विनोद, उपहास और व्यंग्य के माध्यम से भी उनकी आलोचना करता है।

हिन्दी साहित्य में हास्य और व्यंग्य की परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। कबीर की उलटबांसियों और सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार से लेकर भारतेंदु युग के सामाजिक-राजनीतिक व्यंग्य तथा आधुनिक काल के हरिशंकर परसाई और शरद जोशी तक व्यंग्य ने समाज की विसंगतियों को अभिव्यक्त किया है।

आधुनिक युग में समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो और टेलीविजन ने हास्य-व्यंग्य को व्यापक पाठक और दर्शक दिए। इंटरनेट के आगमन ने इस प्रक्रिया को और अधिक व्यापक बना दिया।

इंटरनेट ने हास्य-व्यंग्य को—

- तात्कालिकता,
- संक्षिप्तता,
- दृश्यात्मकता,
- सहभागिता,
- वायरल प्रसार,
- पुनर्रचना,
- सामूहिक सृजन

जैसी विशेषताएँ प्रदान कीं।

इस प्रकार इंटरनेट हास्य-व्यंग्य केवल पुराने व्यंग्य साहित्य का डिजिटल संस्करण नहीं है, बल्कि यह डिजिटल लोक-संस्कृति की एक नई अभिव्यक्ति के रूप में विकसित हुआ है।

2. अध्ययन की पृष्ठभूमि

हिन्दी व्यंग्य साहित्य की परंपरा को समझे बिना इंटरनेट व्यंग्य के स्वरूप को पूरी तरह समझना संभव नहीं है।

हरिशंकर परसाई के लेखन ने व्यंग्य को सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों की गंभीर आलोचना से जोड़ा। उनके साहित्य में पाखंड, भ्रष्टाचार, अवसरवाद, राजनीतिक स्वार्थ और सामाजिक असमानता जैसे विषय प्रमुख रहे हैं। हिन्दी व्यंग्य के अध्ययन में परसाई, शरद जोशी और अन्य व्यंग्यकारों की परंपरा को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है।

मदालसा व्यास की *हिन्दी व्यंग्य साहित्य और हरिशंकर परसाई* (1999) भी हिन्दी व्यंग्य साहित्य और परसाई के साहित्य पर केंद्रित महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ है।

इंटरनेट के आगमन के बाद यही सामाजिक आलोचनात्मक दृष्टि नए डिजिटल माध्यमों में दिखाई देने लगी। अंतर केवल इतना है कि अब व्यंग्यकार के सामने केवल एक संपादक और पत्रिका नहीं, बल्कि लाखों संभावित पाठक हैं।

3. शोध की समस्या

इंटरनेट ने हास्य और व्यंग्य को लोकप्रिय बनाया है, लेकिन इससे कई नए प्रश्न भी उत्पन्न हुए हैं:

1. इंटरनेट हास्य-व्यंग्य का साहित्य से क्या संबंध है?
2. क्या इंटरनेट पर प्रसारित मीम और व्यंग्य साहित्य का नया रूप हैं?
3. पारंपरिक हिन्दी व्यंग्य और डिजिटल व्यंग्य में क्या अंतर है?
4. इंटरनेट हास्य-व्यंग्य को लोक संस्कृति क्यों कहा जा सकता है?
5. क्या वायरल होना साहित्यिक गुणवत्ता का प्रमाण है?
6. इंटरनेट व्यंग्य में भाषा किस प्रकार बदल रही है?
7. युवा वर्ग इंटरनेट हास्य-व्यंग्य को किस प्रकार ग्रहण करता है?
8. क्या डिजिटल व्यंग्य सामाजिक परिवर्तन और जनमत निर्माण में भूमिका निभाता है?

4. शोध के उद्देश्य

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य हैं—

1. इंटरनेट हास्य-व्यंग्य के उद्भव की पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. हिन्दी हास्य-व्यंग्य की पारंपरिक परंपरा और इंटरनेट व्यंग्य के संबंध को स्पष्ट करना।
3. इंटरनेट पर विकसित हास्य-व्यंग्य के विभिन्न रूपों का अध्ययन करना।
4. मीम, पैरोडी, वायरल वीडियो और डिजिटल चुटकुलों की साहित्यिक प्रकृति को समझना।
5. इंटरनेट हास्य-व्यंग्य की भाषा एवं शिल्प का विश्लेषण करना।
6. युवा वर्ग पर इंटरनेट हास्य-व्यंग्य के प्रभाव का अध्ययन करना।
7. इंटरनेट व्यंग्य को नई लोक संस्कृति के रूप में देखने की संभावनाओं का अध्ययन करना।
8. इंटरनेट हास्य-व्यंग्य की सीमाओं और चुनौतियों का विश्लेषण करना।

5. शोध-प्रश्न

- प्रमुख शोध-प्रश्न

1. इंटरनेट ने हिन्दी हास्य-व्यंग्य के स्वरूप में क्या परिवर्तन किए हैं?
2. क्या मीम संस्कृति को आधुनिक लोक-संस्कृति की अभिव्यक्ति माना जा सकता है?
3. इंटरनेट हास्य-व्यंग्य में भाषा और कथ्य किस प्रकार बदल रहे हैं?
4. क्या इंटरनेट व्यंग्य पारंपरिक व्यंग्य की सामाजिक आलोचनात्मक भूमिका को आगे बढ़ा रहा है?
5. युवा पाठक और इंटरनेट हास्य-व्यंग्य के बीच किस प्रकार का संबंध विकसित हुआ है?

6. शोध-पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यत: वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और गुणात्मक शोध-पद्धति पर आधारित है।

अध्ययन में निम्न प्रकार की सामग्री को संदर्भ के रूप में लिया गया है:

- हिन्दी हास्य-व्यंग्य साहित्य
- व्यंग्य संबंधी आलोचनात्मक ग्रंथ
- इंटरनेट संस्कृति पर अकादमिक अध्ययन
- सोशल मीडिया पर वायरल हास्य सामग्री
- मीम संस्कृति
- डिजिटल पैरोडी
- इंटरनेट आधारित सामाजिक एवं राजनीतिक व्यंग्य

Sangeet Kumar के भारतीय वेब पर meme, parody और viral culture संबंधी अध्ययन को इस शोध की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि में विशेष महत्व दिया गया है। उनके अनुसार भारतीय वेब पर memes, viral videos और websites में parody तथा satire सामाजिक-सांस्कृतिक आलोचना के नए discourse के रूप में उभर रहे थे।

7. हास्य और व्यंग्य : अर्थ एवं अंतर

हास्य और व्यंग्य को अक्सर एक ही अर्थ में प्रयोग किया जाता है, लेकिन दोनों में अंतर है।

- हास्य

हास्य का प्रमुख उद्देश्य हँसी या मनोरंजन उत्पन्न करना होता है।

- व्यंग्य

व्यंग्य का उद्देश्य केवल हँसाना नहीं बल्कि किसी व्यक्ति, संस्था, व्यवस्था, सामाजिक प्रवृत्ति या विचार की विसंगति को उजागर करना भी होता है।

इसलिए कहा जा सकता है:

हास्य हँसाता है, जबकि व्यंग्य हँसाते हुए सोचने के लिए विवश करता है।

हरिशंकर परसाई ने भी व्यंग्य को केवल विनोद या मखौल से अलग समझने की आवश्यकता पर बल दिया था। उनके लेख *व्यंग्य क्यों? कैसे? किस लिए?* में हिन्दी में व्यंग्य को लेकर प्रचलित भ्रमों की आलोचना की गई है।

8. हिन्दी व्यंग्य की परंपरा

हिन्दी व्यंग्य की परंपरा आधुनिक काल से बहुत पहले की है।

8.1 कबीर

कबीर ने धार्मिक पाखंड, जातिगत रूढ़ियों और सामाजिक विसंगतियों पर तीखे प्रहार किए।

8.2 भारतेंदु हरिश्चंद्र

भारतेंदु युग में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना से जुड़े व्यंग्य का विकास हुआ।

8.3 बालमुकुंद गुप्त

पत्रकारीय लेखन में सामाजिक और राजनीतिक व्यंग्य को प्रभावी रूप मिला।

8.4 हरिशंकर परसाई

स्वतंत्रता के बाद परसाई ने व्यंग्य को गंभीर सामाजिक आलोचना का माध्यम बनाया।

8.5 शरद जोशी

शरद जोशी ने सामान्य जीवन, राजनीति, व्यवस्था और मध्यवर्गीय मानसिकता को हास्य-व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया।

इस परंपरा की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि व्यंग्य समाज को केवल हँसी का विषय नहीं बनाता, बल्कि उसकी विसंगतियों की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

9. इंटरनेट साहित्य का उद्भव

इंटरनेट ने साहित्य की संचार व्यवस्था को बदल दिया।

मुद्रित साहित्य में:

लेखक → संपादक → प्रकाशक → पुस्तक/पत्रिका → पाठक

जबकि इंटरनेट साहित्य में:

लेखक → इंटरनेट मंच → पाठक

यह परिवर्तन अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अब कोई व्यक्ति ब्लॉग, वेबसाइट या सोशल मीडिया पर अपनी रचना सीधे प्रकाशित कर सकता है।

इससे साहित्य का मध्यस्थता-रहित प्रकाशन संभव हुआ।

10. इंटरनेट हास्य-व्यंग्य के प्रमुख रूप

इंटरनेट पर हास्य-व्यंग्य अनेक रूपों में दिखाई देता है।

10.1 डिजिटल चुटकुले

छोटे-छोटे चुटकुले इंटरनेट पर तेजी से साझा किए जाते हैं।

इनमें अक्सर—

- परिवार,
- विवाह,
- नौकरी,
- शिक्षा,

- राजनीति,
- महँगाई,
- मोबाइल,
- रिश्ते

जैसे विषय दिखाई देते हैं।

10.2 मीम

मीम इंटरनेट हास्य-व्यंग्य का सबसे प्रभावशाली रूप बन चुका है।

आमतौर पर एक लोकप्रिय तस्वीर या वीडियो के साथ नया पाठ जोड़कर नया अर्थ पैदा किया जाता है।

इस प्रकार:

पुराना दृश्य + नया संदर्भ = नया हास्य/व्यंग्य

Sangeet Kumar ने भारतीय वेब की meme culture को "repetition with difference" की प्रक्रिया से जोड़ा—अर्थात वही दृश्य या सामग्री नए संदर्भ में जाकर नया अर्थ उत्पन्न कर सकती है। (Sage Journals)

11. मीम और लोक संस्कृति

लोक संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ हैं:

- सामूहिक भागीदारी
- मौखिक/अनौपचारिक प्रसार
- सामुदायिक स्वामित्व
- परिवर्तनशीलता
- पुनर्रचना
- स्थानीय संदर्भ

इंटरनेट मीम में भी ये विशेषताएँ दिखाई देती हैं।

एक व्यक्ति मीम बनाता है।

दूसरा उसे बदलता है।

तीसरा उसमें नया संवाद जोड़ता है।

चौथा उसे किसी स्थानीय घटना से जोड़ देता है।

इस प्रकार मीम किसी एक व्यक्ति की रचना न रहकर सामूहिक डिजिटल रचना बन जाता है।

इसी कारण इंटरनेट मीम संस्कृति को नई लोक संस्कृति के रूप में देखने की संभावना मजबूत होती है।

12. इंटरनेट व्यंग्य की पुनर्रचना

लोक संस्कृति में कोई कहानी, कहावत या लोकगीत अलग-अलग क्षेत्रों में नए रूप ग्रहण करता है।

ठीक इसी प्रकार इंटरनेट सामग्री भी लगातार बदलती रहती है।

उदाहरण:

एक प्रसिद्ध फिल्मी संवाद

→ राजनीतिक संदर्भ

→ सामाजिक संदर्भ

→ शिक्षा संबंधी संदर्भ

→ कार्यालय संबंधी संदर्भ

→ पारिवारिक संदर्भ

इस प्रक्रिया में मूल सामग्री का अर्थ बदलता रहता है।

इसे डिजिटल युग की लोक पुनर्रचना कहा जा सकता है।

13. राजनीतिक हास्य और व्यंग्य

इंटरनेट हास्य-व्यंग्य का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र राजनीति है।

राजनीतिक व्यक्तियों, नीतियों और घटनाओं को लेकर—

- मीम,
- कार्टून,
- पैरोडी,
- वीडियो,
- व्यंग्यात्मक ट्वीट,
- फोटो संपादन

का उपयोग किया जाता है।

भारतीय वेब पर meme और parody को सामाजिक एवं राजनीतिक आलोचना के माध्यम के रूप में देखने वाले शोध पहले से उपलब्ध हैं।

2020 में प्रकाशित Ankita Chatterjee के अध्ययन ने भी नए मीडिया में राजनीतिक मीमों के माध्यम से हास्य निर्माण का विश्लेषण किया और पाया कि इंटरनेट मीम images को modify करने तथा हास्य उत्पन्न करने का माध्यम बनते हैं।

14. मीम में अंतर्पाठीयता

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, June 2019
Impact Factor: 4.819

इंटरनेट हास्य-व्यंग्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता intertextuality अर्थात अंतर्पाठीयता है।

एक मीम को समझने के लिए पाठक को कई संदर्भों की जानकारी हो सकती है:

- फिल्म
- टीवी धारावाहिक
- राजनीति
- क्रिकेट
- विज्ञापन
- लोकप्रिय संवाद
- समाचार
- लोककथा

उदाहरण के लिए किसी प्रसिद्ध फिल्म के संवाद को किसी वर्तमान राजनीतिक घटना के संदर्भ में प्रयोग करने से नया हास्य उत्पन्न होता है।

इसलिए इंटरनेट हास्य को समझने के लिए साझा सांस्कृतिक स्मृति आवश्यक है।

15. भाषा का बदलता स्वरूप

इंटरनेट हास्य-व्यंग्य ने हिन्दी भाषा के स्वरूप को भी प्रभावित किया है।

इसमें निम्न प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं:

15.1 बोलचाल की हिन्दी

भाषा अधिक सहज और अनौपचारिक होती है।

15.2 Hinglish

हिन्दी और अंग्रेजी का मिश्रण व्यापक रूप से दिखाई देता है।

15.3 संक्षिप्त भाषा

कम शब्दों में अधिक प्रभाव पैदा करने का प्रयास होता है।

15.4 नए डिजिटल शब्द

Like, share, comment, troll, viral, trend आदि शब्द सामान्य डिजिटल भाषा का हिस्सा बन गए हैं।

15.5 इमोजी

इमोजी भी डिजिटल हास्य के अर्थ-निर्माण में सहायक होते हैं।

16. हास्य और दृश्य संस्कृति

पारंपरिक साहित्य मुख्यत: शब्द आधारित था।

इंटरनेट हास्य में शब्द के साथ—

- फोटो,
- GIF,
- वीडियो,
- emoji,
- typography,
- animation

जुड़ते हैं।

इससे हास्य का अर्थ केवल भाषाई नहीं रह जाता।

एक तस्वीर कभी-कभी सैकड़ों शब्दों से अधिक प्रभाव पैदा कर सकती है।

17. वायरल संस्कृति

इंटरनेट हास्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है virality।

किसी सामग्री को तेजी से—

देखना → पसंद करना → साझा करना → पुन: बनाना

वायरल संस्कृति का निर्माण करता है।

पारंपरिक साहित्य में किसी रचना को लोकप्रिय होने में महीनों या वर्षों का समय लग सकता था।

इंटरनेट पर कोई सामग्री कुछ घंटों में लाखों लोगों तक पहुँच सकती है।

इससे साहित्य और जन-संचार की गति में मूलभूत परिवर्तन आया है।

---

18. युवा और इंटरनेट हास्य

युवा इंटरनेट हास्य के सबसे सक्रिय निर्माता और उपभोक्ताओं में हैं।

भारत में smartphones और mobile internet की बढ़ती पहुँच ने युवाओं को वैश्विक और स्थानीय meme trends से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। Devina Sarwatay के अध्ययन में भारतीय युवाओं की meme culture और लोकप्रिय वायरल memes में उनकी सक्रिय भागीदारी पर चर्चा की गई है।

युवा वर्ग इंटरनेट हास्य के माध्यम से:

- मनोरंजन करता है,
- मित्रों से संवाद करता है,
- सामाजिक घटनाओं पर प्रतिक्रिया देता है,

- राजनीतिक विचार व्यक्त करता है,
- अपनी पहचान प्रदर्शित करता है।

इस प्रकार meme केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं रह जाता।

19. इंटरनेट व्यंग्य और सामाजिक आलोचना

व्यंग्य का मूल उद्देश्य सामाजिक विसंगतियों की ओर ध्यान आकर्षित करना है।

इंटरनेट व्यंग्य निम्न विषयों को उठाता है:

- भ्रष्टाचार
- महँगाई
- बेरोजगारी
- शिक्षा व्यवस्था
- राजनीतिक वादे
- सामाजिक भेदभाव
- उपभोक्तावाद
- दिखावा
- पारिवारिक संबंध
- तकनीकी निर्भरता

इस प्रकार इंटरनेट हास्य सामाजिक आलोचना का त्वरित माध्यम बन जाता है।

20. इंटरनेट हास्य में लोक जीवन

नई डिजिटल लोक संस्कृति में रोजमर्रा का जीवन महत्वपूर्ण विषय बन गया है।

उदाहरण:

- ऑफिस जाने वाला कर्मचारी
- कॉलेज विद्यार्थी
- प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी
- माता-पिता और बच्चे
- पति-पत्नी
- मोबाइल का अत्यधिक उपयोग

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, June 2019
Impact Factor: 4.819

- ऑनलाइन shopping
- पड़ोसी
- ग्रामीण और शहरी जीवन

इन अनुभवों पर बने हास्य से उपयोगकर्ता स्वयं को जोड़ पाता है।

इसलिए डिजिटल हास्य में सामान्य व्यक्ति का दैनिक जीवन एक महत्वपूर्ण साहित्यिक-सांस्कृतिक सामग्री बन गया है।

21. पारंपरिक व्यंग्य बनाम इंटरनेट व्यंग्य

आधार	पारंपरिक व्यंग्य	इंटरनेट व्यंग्य
माध्यम	पुस्तक/पत्रिका	सोशल मीडिया/वेब
लेखक	प्रायः पहचाना हुआ लेखक	कोई भी उपयोगकर्ता
प्रकाशन	संपादक/प्रकाशक	तत्काल प्रकाशन
भाषा	साहित्यिक	बोलचाल/मिश्रित
आकार	विस्तृत	अत्यंत संक्षिप्त
पाठक प्रतिक्रिया	पत्र/समीक्षा	लाइक/कमेंट/शेयर
गति	धीमी	अत्यंत तीव्र
दृश्य तत्व	सीमित	अत्यधिक
पुनर्रचना	अपेक्षाकृत कम	लगातार
प्रसार	क्षेत्रीय/राष्ट्रीय	संभावित वैश्विक
सामूहिकता	सीमित	अत्यधिक
स्थायित्व	अपेक्षाकृत अधिक	platform-dependent

22. इंटरनेट हास्य-व्यंग्य की साहित्यिक विशेषताएँ

इंटरनेट व्यंग्य में निम्न साहित्यिक विशेषताएँ दिखाई देती हैं:

22.1 लघुता

कम शब्दों में अधिक प्रभाव।

22.2 व्यंजना

प्रत्यक्ष कथन के बजाय संकेत के माध्यम से अर्थ निर्माण।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

22.3 विडंबना

कथन और वास्तविकता के बीच विरोध।

22.4 अतिशयोक्ति

किसी स्थिति को जानबूझकर बढ़ाकर प्रस्तुत करना।

22.5 पैरोडी

किसी प्रसिद्ध शैली या कथन की हास्यपूर्ण नकल।

22.6 विरोधाभास

दो विपरीत स्थितियों को साथ रखकर हास्य पैदा करना।

22.7 अंतर्पाठीयता

लोकप्रिय सांस्कृतिक संदर्भों का पुन: उपयोग।

23. हास्य से व्यंग्य तक

हर इंटरनेट joke व्यंग्य नहीं होता।

एक साधारण joke:

केवल मनोरंजन करता है।

लेकिन जब उसी joke में—

- व्यवस्था की आलोचना,
- सामाजिक पाखंड,
- राजनीतिक विरोधाभास,
- सांस्कृतिक विडंबना

शामिल हो जाती है, तो वह व्यंग्य का रूप ग्रहण कर सकता है।

इस अंतर को समझना इंटरनेट साहित्य के अध्ययन के लिए आवश्यक है।

24. इंटरनेट व्यंग्य और जनतांत्रिक संवाद

इंटरनेट ने अभिव्यक्ति के नए अवसर प्रदान किए।

पारंपरिक मीडिया में सामग्री प्रकाशित होने से पहले संपादकीय प्रक्रिया से गुजरती थी।

सोशल मीडिया में व्यक्ति स्वयं प्रकाशित कर सकता है।

इससे:

व्यक्ति ⟶ लेखक

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, June 2019
Impact Factor: 4.819

और

पाठक ⟶ निर्माता

में बदल सकता है।

इस अर्थ में इंटरनेट हास्य-व्यंग्य लोकतांत्रिक संवाद को बढ़ावा देता है।

25. लेकिन क्या इंटरनेट व्यंग्य हमेशा स्वतंत्र है?

नहीं।

इंटरनेट व्यंग्य की कुछ सीमाएँ भी हैं:

- ट्रोलिंग
- गलत सूचना
- फर्जी उद्धरण
- भ्रामक मीम
- व्यक्तिगत अपमान
- घृणात्मक सामग्री
- कॉपीराइट संबंधी समस्याएँ
- संदर्भ से बाहर सामग्री

कभी-कभी हास्य और अपमान के बीच की सीमा भी धुंधली हो जाती है।

इसलिए डिजिटल व्यंग्य में सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिकता आवश्यक है।

26. साहित्यिकता का प्रश्न

एक महत्वपूर्ण प्रश्न है:

क्या मीम साहित्य है?

इसका सीधा उत्तर देना कठिन है।

हर मीम साहित्य नहीं है।

लेकिन कुछ डिजिटल रचनाओं में—

- भाषा की कलात्मकता,
- व्यंग्यात्मक संरचना,
- सांस्कृतिक संकेत,
- प्रतीक,

- सामाजिक आलोचना,
- सृजनात्मकता

इतनी मजबूत हो सकती है कि वे डिजिटल साहित्य के अध्ययन योग्य पाठ बन जाएँ।

इसलिए मीम को साहित्य मानने के बजाय डिजिटल सांस्कृतिक पाठ के रूप में देखना अधिक उपयोगी हो सकता है।

27. इंटरनेट हास्य-व्यंग्य और नई लोक संस्कृति

इस शोध का केंद्रीय तर्क यही है कि इंटरनेट हास्य-व्यंग्य को नई लोक संस्कृति का एक रूप माना जा सकता है।

इसके कारण:

- पहला — सामूहिक सृजन

अनेक लोग एक ही सामग्री को बदलकर नया रूप देते हैं।

- दूसरा — मौखिकता जैसी प्रवृत्ति

हालाँकि माध्यम डिजिटल है, लेकिन सामग्री का प्रसार लोककथाओं की तरह व्यक्ति से व्यक्ति तक होता है।

- तीसरा — परिवर्तनशीलता

सामग्री लगातार बदलती रहती है।

- चौथा — सामुदायिक संदर्भ

एक समुदाय अपने साझा अनुभवों के आधार पर हास्य निर्मित करता है।

- पाँचवाँ — तात्कालिकता

घटना और हास्य सामग्री के बीच समय-अंतर बहुत कम हो सकता है।

इसलिए डिजिटल meme culture को लोक संस्कृति का तकनीकी रूपांतरण कहा जा सकता है।

28. 2019–20 का विशेष संदर्भ

2019–20 में इंटरनेट हास्य-व्यंग्य के अध्ययन के लिए कई महत्वपूर्ण प्रवृत्तियाँ मौजूद थीं।

भारत में सोशल मीडिया राजनीतिक और सामाजिक संवाद का महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका था।

Sangeet Kumar का भारतीय वेब पर 2015 का अध्ययन पहले ही यह दिखा चुका था कि memes, viral videos और parody भारतीय इंटरनेट पर सामाजिक और सांस्कृतिक critique के रूप में उभर रहे थे।

2019 में satire detection पर भारतीय शोध भी प्रकाशित हुआ। Sinha, Patekar और Mamidi ने FIRE 2019 में सोशल मीडिया की textual और visual सामग्री में satire की पहचान से जुड़ी समस्या का अध्ययन किया। उन्होंने irony, sarcasm, ridicule, hyperbole और अन्य linguistic संकेतों को satire से संबंधित बताया।

यह तथ्य महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे स्पष्ट होता है कि 2019 तक इंटरनेट satire केवल साहित्यिक या सांस्कृतिक विषय नहीं रहा था, बल्कि computational research का भी विषय बन चुका था।

29. 2020 और मीम संस्कृति

2020 तक meme culture पर अकादमिक विमर्श और स्पष्ट हुआ।

Kanika Kumar और Vishal Varier ने 2020 में internet meme को online humour का महत्वपूर्ण माध्यम बताया और meme तथा anti-meme के माध्यम से digital humour की semiotic संरचना का विश्लेषण किया।

यह अध्ययन यह समझने में मदद करता है कि इंटरनेट हास्य केवल "मजेदार तस्वीर" नहीं है बल्कि text, image, expectation और irony के बीच संबंधों से अर्थ पैदा करता है।

30. कोविड-19 और इंटरनेट हास्य

2020 में COVID-19 महामारी के दौरान इंटरनेट हास्य ने लोगों के दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

लॉकडाउन, work from home, online classes, घर में रहने की स्थिति और सामाजिक दूरी जैसे अनुभव इंटरनेट हास्य के विषय बने।

यहाँ हास्य का एक मनोवैज्ञानिक पक्ष भी दिखाई देता है।

कठिन परिस्थितियों के बीच हास्य:

- तनाव कम करता है,
- सामुदायिक भावना पैदा करता है,
- साझा अनुभव को व्यक्त करता है,
- कठिन परिस्थिति पर टिप्पणी करने का माध्यम बनता है।

इस प्रकार महामारी काल ने इंटरनेट हास्य को सामाजिक अनुभव के दस्तावेज के रूप में भी महत्वपूर्ण बनाया।

31. इंटरनेट हास्य-व्यंग्य की सीमाएँ

31.1 सतहीपन

अत्यधिक संक्षिप्तता के कारण विचार की गहराई कम हो सकती है।

31.2 साहित्यिक संपादन का अभाव

हर सामग्री संपादकीय प्रक्रिया से नहीं गुजरती।

31.3 मौलिकता की समस्या

एक ही मीम को हजारों लोग बदलकर इस्तेमाल करते हैं।

31.4 गलत सूचना

हास्य के नाम पर गलत तथ्य तेजी से फैल सकते हैं।

31.5 व्यक्तिगत आक्रमण

व्यंग्य कभी-कभी आलोचना के बजाय व्यक्तिगत अपमान में बदल सकता है।

- 31.6 संदर्भ की समस्या

किसी मीम को उसके मूल संदर्भ से अलग देखने पर उसका अर्थ बदल सकता है।

32. भविष्य की संभावनाएँ

इंटरनेट हास्य-व्यंग्य का भविष्य अनेक स्तरों पर महत्वपूर्ण है।

32.1 डिजिटल साहित्य अध्ययन

विश्वविद्यालयों में इंटरनेट साहित्य के अध्ययन की संभावनाएँ बढ़ेंगी।

32.2 डिजिटल अभिलेख

आज के memes भविष्य के सांस्कृतिक इतिहास के दस्तावेज बन सकते हैं।

32.3 भाषायी विविधता

हिन्दी के साथ क्षेत्रीय भाषाओं में भी meme culture विकसित होगा।

32.4 शिक्षा

हास्य और मीम का उपयोग शिक्षण में किया जा सकता है।

32.5 सामाजिक आलोचना

डिजिटल व्यंग्य जनमत निर्माण का प्रभावी माध्यम बना रह सकता है।

33. प्रमुख निष्कर्ष

इस अध्ययन के आधार पर निम्न निष्कर्ष सामने आते हैं:

1. इंटरनेट ने हिन्दी हास्य-व्यंग्य को नया माध्यम और नया पाठक-वर्ग प्रदान किया है।
2. डिजिटल व्यंग्य पारंपरिक व्यंग्य की सामाजिक आलोचना की परंपरा को आगे बढ़ाता है, लेकिन उसकी अभिव्यक्ति अधिक संक्षिप्त और दृश्यात्मक हो गई है।
3. मीम इंटरनेट हास्य-व्यंग्य का प्रमुख रूप है।
4. मीम संस्कृति में सामूहिक रचना और पुनर्रचना की प्रवृत्ति होती है।
5. इंटरनेट हास्य में लोकप्रिय संस्कृति के संदर्भों का व्यापक प्रयोग होता है।
6. डिजिटल व्यंग्य में हिन्दी, अंग्रेजी और Hinglish का मिश्रण दिखाई देता है।

7. युवा वर्ग इंटरनेट हास्य का केवल उपभोक्ता नहीं बल्कि सक्रिय निर्माता भी है। भारतीय युवा meme culture के सक्रिय participants हैं, जैसा कि भारतीय youth meme cultures पर उपलब्ध शोध में भी रेखांकित किया गया है।
8. इंटरनेट व्यंग्य सामाजिक और राजनीतिक आलोचना का माध्यम बन सकता है।
9. वायरलता और साहित्यिक गुणवत्ता अलग-अलग अवधारणाएँ हैं।
10. इंटरनेट हास्य-व्यंग्य को नई लोक संस्कृति के रूप में समझने की पर्याप्त आधारभूमि मौजूद है।

34. उपसंहार

हिन्दी हास्य-व्यंग्य साहित्य की परंपरा समाज की विसंगतियों को उजागर करने वाली परंपरा रही है। कबीर से भारतेंदु और बालमुकुंद गुप्त होते हुए हरिशंकर परसाई तथा शरद जोशी तक व्यंग्य ने अपने समय की सामाजिक वास्तविकताओं को अभिव्यक्ति दी।

इंटरनेट ने इसी परंपरा को एक नए संचार वातावरण में प्रवेश कराया है।

आज व्यंग्य केवल पुस्तक या पत्रिका के पन्नों पर नहीं है। वह—

मोबाइल स्क्रीन, मीम, ट्वीट, पोस्ट, वीडियो, GIF, कार्टून और डिजिटल पैरोडी

में भी दिखाई देता है।

इंटरनेट हास्य-व्यंग्य की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सामूहिकता और तात्कालिकता है। यहाँ पाठक रचना को केवल पढ़ता नहीं, बल्कि उसे बदलता, साझा करता और पुनः रचता भी है।

इस दृष्टि से इंटरनेट हास्य-व्यंग्य को केवल मनोरंजन का माध्यम मानना उचित नहीं होगा। यह वर्तमान समाज की मानसिकता, राजनीतिक चेतना, लोकप्रिय संस्कृति और रोजमर्रा के अनुभवों का दस्तावेज भी है।

इसलिए निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि—

इंटरनेट हास्य-व्यंग्य हिन्दी साहित्य की परंपरा का अंत नहीं, बल्कि उसके माध्यम, भाषा और लोक-संपर्क में आया एक नया परिवर्तन है।

यह परिवर्तन साहित्य को अभिजात साहित्यिक संस्थाओं की सीमाओं से बाहर निकालकर जन-संचार के व्यापक डिजिटल क्षेत्र में ले जाता है और एक ऐसी नई डिजिटल लोक संस्कृति का निर्माण करता है जिसमें रचनाकार और पाठक की भूमिकाएँ लगातार एक-दूसरे में बदलती रहती हैं।

संदर्भ ग्रंथ

A. हिन्दी साहित्य एवं व्यंग्य

1. इन्द्रनाथ मदान. *हिंदी की हास्य व्यंग्य विधा का स्वरूप और विकास*. साहित्य सम्मेलन प्रकाशन, प्रयाग, 1978. यह ग्रंथ हिन्दी हास्य-व्यंग्य की प्रकृति और विकास के अध्ययन के लिए उपयोगी संदर्भ है। (IGML Net)
2. श्यामसुन्दर घोष. *व्यंग्य क्या, व्यंग्य क्यों*. सतसाहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1983. (IGML Net)
3. डॉ. मलय. *व्यंग्य का सौन्दर्यशास्त्र*. साहित्यवाणी प्रकाशन, इलाहाबाद, 1983. (IGML Net)

4. मदालसा व्यास. *हिन्दी व्यंग्य साहित्य और हरिशंकर परसाई*. विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1999. पुस्तक में हिन्दी व्यंग्य साहित्य तथा हरिशंकर परसाई के साहित्य का अध्ययन किया गया है। (CiNii Research)
5. राजेश जैन. *हिंदी का समकालीन व्यंग्य साहित्य*. संधि प्रकाशन, जयपुर, 1991. (IGML Net)
6. बालेंदुशेखर तिवारी (सम्पा.). *व्यंग्य ही व्यंग्य*. सतसाहित्य प्रकाशन, 1987. (IGML Net)
7. हरिशंकर परसाई. *विकलांग श्रद्धा का दौर*. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली. (IGML Net)

B. इंटरनेट, मीम और डिजिटल व्यंग्य

8. Kumar, Sangeet. (2015). "Contagious memes, viral videos and subversive parody: The grammar of contention on the Indian web." *International Communication Gazette*, 77(3), 232–247. DOI: 10.1177/1748048514568758. यह भारतीय वेब पर memes, viral videos, parody और satire को सामाजिक-सांस्कृतिक critique के रूप में समझने वाला महत्वपूर्ण अध्ययन है।
9. Sinha, Aman; Patekar, Parth; & Mamidi, Radhika. (2019). "Unsupervised Approach for Monitoring Satire on Social Media." *Proceedings of FIRE 2019*, Kolkata, pp. 36–41. DOI: 10.1145/3368567.3368582. अध्ययन सोशल मीडिया में textual तथा visual satire की पहचान और irony, sarcasm, ridicule तथा hyperbole जैसे संकेतों पर केंद्रित है।
10. Kumar, Kanika & Varier, Vishal. (2020). "To Meme or Not to Meme: The Contribution of Anti-Memes to Humour in the Digital Space." *Language@Internet*, Vol. 18. यह अध्ययन meme, anti-meme, irony, parody और text-image relationship के आधार पर digital humour का विश्लेषण करता है।
11. Sarwatay, Devina. (2020). "Young People's Meme Cultures in India." In *The Handbook of Media Education Research*. अध्ययन भारतीय युवाओं और meme culture के संबंध का विश्लेषण करता है।
12. Chatterjee, Ankita. (2020). "Humour in Narendra Modi memes on new media." *South Asian Popular Culture*, 18(3), 227–245. DOI: 10.1080/14746689.2020.1815450. अध्ययन भारतीय नए मीडिया में राजनीतिक memes और हास्य के संबंध का विश्लेषण करता है।